श्री म० ला० त्रिवेदी : अखबारी कागज के तीनों कारखानों के लिए लाइसेंस दिया गया है। मैं जानना चाहता हूं कि यह तीनों कारखाने प्राइवेट सैक्टर में हैं या पब्लिक सैक्टर में हैं और अगर पब्लिक सैक्टर में हैं तो उन पर कितनी लागत आयेगी ?

श्री कानूनगो : एक प्लांट का पब्लिक सैक्टर में ऐक्सपेंशन हो रहा है लेकिन यह तीनों कारखाने प्राइवेट सैक्टर में हैं।

Shri K. C. Pant: The only synthetic rubber plant under construction at the moment is based on alcohol. May I know whether the Government propose to encourage the use of raw materials other than alcohol, for the manufacture of synthetic rubber and if so, what will be the effect on the cost of production?

Shri Kanungo: If there are any proposals, they will be considered and discussed by the Development Wing. So far we have no proposal.

Shri S. C. Samanta: Is it a fact that indigenous newsprint that is manufactured at present is higher in cost than the imported one and if so, what steps will be taken to lower the cost of production in the three plants that are going to be set up?

Shri Kanungo: It is a fact that because of various reasons, almost historical, the cost of production in NEPA has not been as low as it ought to be. Recently, we had a team of experts and they have made suggestions, the result of which will be that the cost of production will be lower. As far as the other plants are concerned, we are satisfied that the production plant is such that it will not be too costly.

पाकिस्तानियों द्वारा भारतीय मछुओं का अपहरण

+

१५४४. { **श्री भक्त दर्शन** :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री प्र० के० देव :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि २३ मई, १९६२ को सशस्त्र पाकिस्तानीयों का एक गिरोह पश्चिम बंगाल के पश्चिम दीनाजपुर जिले में भारतीय इलाके में घुस आया था और उसने एक भारतीय मछुवे का अपहरण कर लिया था ;

(ख) यदि हां, तो घटना का ब्यौरा क्या है ; और

(ग) क्या इस बारे में कोई विरोध पत्र भेजा गया है ?

वैदेशिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिनेश सिंह) (क) और (ख). २३ और २४ मई, १९६२ को पूर्व पाकिस्तान राइफल्स के हथियारबन्द कर्मचारियों की छोटी-छोटी टुकड़ियां, पश्चिम दीनाजपुर जिले के भटसाल नामक गांव में, भारतीय इलाके में घुस आईं, लेकिन जैसे ही भारतीय पुलिस का एक मजबूत दस्ता उस जगह पर पहुंचा, वैसे ही वे वापस चली गईं। पाकिस्तानी टुकड़ी एक भारतीय मछुवे को पकड़ ले गई थी, लेकिन भारतीय पुलिस दल के नायक के हस्तक्षेप करने पर उसे बाद में छोड़ दिया गया।

(ग) जी हां। हमारे जिला अधिकारियों और राज्य सरकार ने पूर्व पाकिस्तान के जिला अधिकारियों और राज्य सरकार के पास विरोध-पत्र भेजे थे। भारत सरकार ने भी राजनयिक माध्यम से विरोध-पत्र भेजा है।

I shall read the answer in English also.

(a) and (b). Small groups of armed East Pakistan Rifles personnel trespassed into Indian territory in the village Bhatsala in the district of West Dinajpur on 23rd and 24th May, 1962, but withdrew as soon as a strong Indian Police contingent arrived on the scene. They kidnapped an Indian fisherman who was subsequently released upon the intervention of the

Officer-in-Charge of the Indian Police contingent.

(c) Yes, Sir. Protests were lodged by our District Officers, and the State Government, with their counterparts in East Pakistan, and also by the Government of India through the diplomatic channel.

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, यह घटना २३ और २४ मई को हुई। मैं जानना चाहता हूं कि भारत सरकार की ओर से कब विरोध पत्र भेजा गया और पाकिस्तान सरकार ने उस का क्या उत्तर दिया है ?

श्री दिनेश सिंह : मैंने अभी अर्ज किया कि यह विरोधपत्र तीन जगह से दिये गये। जिला अधिकारियों ने और राज्य सरकार ने इसके बारे में फौरन विरोधपत्र भेजे। जैसे ही भारत सरकार को इसकी खबर मिली तो हम ने भी पाकिस्तान सरकार को विरोधपत्र भेज दिया है लेकिन अभी तक उसका कोई उत्तर नहीं आया है।

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन् चूंकि इस तरह की घटनायें कुछ दिनों से बढ़ती चली जा रही हैं जिन से कि सीमावर्ती जनता के अन्दर आतंक फैलना स्वाभाविक है तो इस सम्बन्ध में क्या कुछ और कठोर कदम उठाने का विचार किया जा रहा है या कोई इस तरह के कदम उठाये गये हैं ?

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य मंत्री तथा अणु शक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : मैं तो नहीं समझता कि यह बढ़ती जाती हैं। मैं इनको बहुत खतरनाक नहीं समझता। यह बदतमीजी की बातें हैं जिनका कि इंतजाम काफी है।

Shri D. C. Sharma: Sir, Col. Bhattacharya was arrested by the Pakistan Government even when he was in the Indian territory.

Mr. Speaker: This question is about a particular incident that took place on a particular date.

Shri D. C. Sharma: The Indian territory is invaded—I am using the word 'loosely'—or the Indian territory is encroached upon by policemen from East Pakistan. Why is it that the West Bengal Police do not arrest those persons?

Shri Jawaharlal Nehru: The word 'invasion' is hardly correct in this sense; 'trespass' is the proper word. They came across the border, a few men. They trespassed and they were driven out. I do not know what the circumstances were, whether it is easily possible to arrest them. It may have led to a mutual firing match. I think it was a right thing to do, to drive them out.

श्री रामेश्वरानन्द : अनेक बार इस प्रकार की घटनाएं होती रहती हैं कि पाकीस्तान भारतीयों को पकड़ कर ले गये तो क्या कभी भारतीय भी उनको पकड़ कर लाये हैं ? क्या इसका उचित प्रबन्ध हो सकेगा कि भारतीयों को इस प्रकार अनाथों की तरह पकड़ कर न ले जाया जाय ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : मैंने कहा अनेक बार ऐसी घटनाएं नहीं होती हैं। पहले से कुछ कम होती हैं। भारतीयों ने कभी उनको पकड़ा या नहीं मैं नहीं जानता लेकिन पाकिस्तान के अखबारों में कभी कभी यह लिखा जाता है कि भारतीय पाकिस्तानियों को पकड़ कर ले गये।

Shri Hem Barua: Sir, in view of the fact that kidnapping of Indians from Indian soil including the kidnapping of Col. Bhattacharya from our soil has almost become a regular matter with Pakistan, may I know whether Government propose to allow Pakistani vandalism to continue in our territory *ad infinitum*?

Shri Jawaharlal Nehru: I do not think it is a frequent occurrence now. This has occurred only in disputed territory, that is, chit-lands or others which the Pakistanis may claim as in their possession or some such dispute is there. It has occurred in the middle of the river where Pakistan says that it is Pakistan territory or Pakistan waters. I think they are lessening, and the more all these things are straightened out and the exact boundary defined, the less of it will happen.

श्री सरजू पाण्डेय : अभी प्रधान मंत्री जी ने बतलाया कि पाकिस्तान की तरफ से इस तरह की बदतमीजी हुई है, थोड़ी ही सही लेकिन हो रही है तो क्या कोई नया कदम सरकार इस बदतमीजी को ठीक से रोकने के लिये उठा रही है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : माफ कीजियेगा म समझा नहीं ।

अध्यक्ष महोदय : आप ने कहा कि ऐसी बदतमीजियां कई दफा होती हैं तो वह कहते हैं कि इन को बन्द करने के लिये क्या सरकार कोई नया कदम उठा रही है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : पुराना कदम काफी मालूम होता है ।

Nepal's Claim over a Portion of Forest in Bihar

\+

*1545. **Shri Surendra Pal Singh**:
Shri Bagri:
Shri Shree Narayan Das:
Shri Yogendra Jha:
Shri P. C. Borooah:
Shri Bibhuti Mishra:
Shri K. N. Tiwary:
Shri Bhakt Darshan:
Shri Hem Barua:
Shri Prakash Vir Shastri:
Shri Nath Pai:

Will the **Prime Minister** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Government of Nepal have advanced some claim over a portion of Narsahi forest in Champaran district of Bihar; and

(b) if so, what reply has been sent to the Government of Nepal in this regard?

The Minister of State in the Ministry of External Affairs (Shrimati Lakshmi Menon): (a) and (b). It is true that the Government of Nepal lays claim to a small portion of Narsahi forest in Champaran district of Bihar. But this is not a new claim. This matter has been under correspondence between the Government of India and Bihar on one side and the Government of Nepal on the other for the past several years. No final reply has been sent to the Government of Nepal.

Shri Surendra Pal Singh: Has Nepal advanced similar claims elsewhere also?

Shrimati Lakshmi Menon: No, Sir.

श्री विभूति मिश्र : क्या यह सही नहीं है कि यह जंगल अभी हम लोगों के कब्जे में है और हमारे कागज पत्तर से भी मालूम होता है कि वह हिन्दुस्तान का है तो क्या भारतसरकार ने नैपाल सरकार को ऐसी सूचना दी है कि कागज पत्तर में हमारा भाग है और हमारे कब्जे में है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : यह सवाल बहुत वर्षों से चला आ रहा है । आजादी के पहले से यह सवाल चला आ रहा है काफी पुराना सवाल है । हमारे कागज पत्तर में जो कुछ है वह हमारे हक में है उनके कागज पत्तर में कुछ और ही लिखा हुआ है । अब इसी बात पर बहस हुआ करती है । पुराना झगड़ा है, जरा से जंगल के हिस्से का सवाल है । वह इतनी अहमियत नहीं रखता है और हमें मिल कर तय कर लेना चाहिये कि वह इधर रहे या उधर ।

श्री भक्त दर्शन : अभी सरकार की ओर से बताया गया है कि नरशाही फारेस्ट पर नेपाल सरकार का कब्जा नहीं है, केवल दावा